वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जून – 2023

- *इन्सान को कैसे धर्म की ज़रूरत है?*
  - *देव धर्म का निराला पक्ष*
    - *मानवता का निर्माण*
- *नीच रुचियों की कैद और उनसे निकलने की...*
  - *मैं भी हूँ, कोई और भी है।*
    - *जीवन पथ के राही दिक्कतों से.....*
- *एक पुराना पत्र*
  - *एक बेटे के उद्‌गार*

इस अंक और इस पत्रिका के विषय में

Johann Mendel नामक एक महान वैज्ञानिक ने विज्ञान की एक शाखा Genetics में काम किया। वह अपने प्रयोगों और खोजी गई सच्चाईयों को अपनी एक पत्रिका में छापते रहे, परन्तु उन द्वारा खोजी गई सच्चाईयां इंसानियत के सामने चौन्तीस वर्ष तक ना आ सकीं। 1884 में Mendel का देहांत हो गया। 34 वर्ष बाद तीन वैज्ञानिक Hugo de vries, carl corvens और Eric von ने Mendel के काम को देखा और वे हैरान रह गए। उन्होंने Mendel की इस खोज को एक प्रसिद्ध पत्रिका में छाप दिया Genetics की दुनिया में उसके बाद एक नया अध्याय खुल गया और इस क्षेत्र में नई नई खोजें होने लगीं। Mendel साहब Father of Genetics के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

जैसे Mendel का काम कितने ही वर्षों तक इस दुनिया की नज़रों में छुपा रहा वैसे ही सारी दुनिया अभी तक नहीं जानती कि जीवन संबंधी सच्चाई की खोज को लेकर विज्ञान मूलक धर्म का उदय आज से 136 वर्ष पहले (सन् 1887 ई. में) हो चुका है। यह पत्रिका भी 34 वर्ष से उनका प्रचार कर रही है परन्तु अफसोस कि आम इंसानियत की पहुँच से अभी तक यह नया जीवन दर्शन परे है। वक्त आयेगा जब Mendel की खोज की तरह इसको पढ़कर भी लोग हैरान रह जायेंगे और इस नई सोच की पहचान कर उसे अपने जीवन में स्थान देंगे। इस पत्रिका में हम कुछ लेख उसके नये पाठकों के लिए दे रहे हैं कि जिनके हाथों में यह पहली बार जा रही है।

इस पत्रिका का पहला लेख "इंसान को कैसे धर्म की जरूरत है" दूसरा "देव धर्म क्या है?" इसके पाठकों को एक नये धर्म का परिचय मिलेगा जो विज्ञान मूलक और महा कल्याणकारी है। यह धर्म कैसे 136 वर्षों से हितकर कार्य करते हुए जीवनों में परिवर्तन ला रहा है उसका पता हमारे पाठक इसके दूसरे लेख "मानवता का निर्माण" से प्राप्त करेंगे।

इससे अगला लेख जीवन पथ दर्शक पुस्तक से है। नीच सुख अनुराग कितने भयानक होते हैं उसको बताता है अगला लेख "नीच रुचियों की कैद और उनसे निकलने की आवश्यकता" इंसान स्वार्थी बनकर चाहता है कि सारी दुनिया को लूट लूं परन्तु नेचर कहती है कि अगर तुमने सत्य धर्म पाना है तो तुम्हें यह स्वीकार करना होगा कि मैं भी हूँ और और भी है। और परोपकार में लगना होगा। उससे आगे का लेख हमें कठिनाईयों से जूझने का उत्साह देता है।

नोट : हम बहुत सी लाईब्रेरियों को धर्म जीवन भेज रहे हैं। यदि किसी के पास किसी लेख को लेकर प्रश्न हो, तो आप गौतम जी : 98769 - 59659, मिसिज़ बराड़ : 81465 - 53154, गोपाल कृष्ण जी : 99288 - 30802 पर सम्पर्क कर सकते हैं। इस विषय में किसी पुस्तक की आवश्यकता समझें तो Free Cost भेजी जा सकती है।

- Editor

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 6
जून – 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

इन्सान को कैसे धर्म की ज़रूरत है?

दुनियां में सैकड़ों करोड़ों धर्म हैं। भिन्न भिन्न प्रकार की पूजा पाठ भी की जाती है। परन्तु अफसोस दुनियां में नशों, मांसाहार, चोरी, बलात्कार, ठग्गी, बेईमानी, रिश्वतखोरी का बाजार गर्म है। माता पिता अपने बच्चों के हाथों से दुखी हैं, पति पत्नी के आपस में रिश्ते खराब हैं भाई – भाई लड़ रहे हैं। हस्पताल में जाकर देखें कैसे इन्सान गल्त खा खाकर दुखी हो रहे हैं। कोर्ट कचहरियों में जाकर देखें कैसे नर्क छाया हुआ है। घर – घर, नगर – नगर, देश देश से हाहाकार की आवाज उठ रही है। धर्म, धर्म के स्थान, धर्म गुरू रोज बढ़ रहे हैं और साथ साथ दुनियां में नर्क लगातार बढ़ रहा है। इन्सान चाँद और मंगल ग्रह पर जाकर रहना और बसना चाहता है परन्तु अफसोस अभी तक उसे इसी पृथ्वी पर रहना और बसना नहीं आया।

अब सवाल यह है कि इन्सान की ऐसी हालत को दूर करने के लिए कैसे धर्म की ज़रूरत है, इन्सान को ऐसे धर्म की ज़रूरत है कि जिस धर्म का प्रत्येक मेम्बर नशों, मांसाहार, चोरी, जुए, बेईमानी, रिश्वतखोरी, व्यभिचार, जीवहत्या आदि से मुक्त हो। इन्सान को एक ऐसे धर्म की ज़रूरत है कि जिसका प्रत्येक मैंम्बर अंध विश्वासों से मुक्त हो, जो धर्म विज्ञान पर आधारित हो। जिस धर्म की शिक्षा को परखा जा सकता हो।

इन्सान को ऐसे धर्म की ज़रूरत है कि जो इन्सानी रिश्तों को बेहतर बना सके। जिस धर्म के आने से घरों में माता – पिता की सेवा के दृश्य हों। भाई – भाई, भाई बहिनों के प्रेम बढ़ें, पति पत्नी के रिश्तों में तलाक और अनमेल दूर हो, पौधों, पशुओं, मनुष्यों सब की सेवा के दृश्य हों और सारे रिश्तों में मिठास और मेल आवे।

इन्सान को एक ऐसे धर्म की ज़रूरत है कि जिसके द्वारा उसे ऐसी होश मिले कि पहले अगर उसने किसी के पैसों की हानि की हो या किसी का कभी दिल दुखाया हो, तो उसके वो पैसे दुखी दिल के साथ वापिस करे वा उससे अपने बुरे व्यवहार के लिए माफी मांगे।

इन्सान को एक ऐसे धर्म की ज़रूरत है जो उसे परोपकारी बनावे, दूसरों की सेवा करने वाला और, बदले में न पैसा, न नाम, न इज्जत चाहने वाला सेवाकरी बना सके।

इन्सान को ऐसे धर्म की ज़रूरत है कि जिसमें उसे ऐसा आदर्श जीवन रखने वाला

ideal मिले जो सच्चाई भलाई का प्रेमक हो और झूठ और बुराई से नफ़रत करता हो।

सारी दुनिया के इन्सानों के लिए खुशखबरी है कि आज से लगभग 136 वर्ष पहले ऐसा धर्म उदय हो चुका है कि जिसका नाम देव धर्म वा देव समाज है। अफसोस लोगों ने इसका नाम तक नहीं सुना। जब हम लोगों को देव समाज के विषय में बताते हैं तो उनके दिमाग में आर्य समाज वा ब्रह्म समाज आदि का नाम आने लगता है जबकि देव समाज इन सबसे भिन्न है।

देव समाज का प्रत्येक मेम्बर नशों, मांसाहार, चोरी, रिश्वत, जुआ, बेईमानी, व्यभिचार, जीव हत्या छोड़ने की प्रतिज्ञा करके ही देव समाजी बन सकता है। देव समाज का प्रत्येक मेम्बर अन्ध विश्वासों से मुक्त होकर विज्ञान मूलक सत्य शिक्षा को अपनाता है।

देव समाज के त्यौहार भी बड़े निराले हैं। यहां माता पिता संतान दिवस, भाई-बहन दिवस, पति पत्नी दिवस, नौकर मालिक दिवस, देश के संबंध में दिन, बेजान चीजों के संबंध में दिन, पौधों के संबंध में दिन, पशुओं के संबंध में दिन, मनुष्यों के संबंध में दिन आदि मनाये जाते हैं।

देव समाज का इतिहास ऐसी हजारों घटनाओं से भरा पड़ा है, जहाँ एक एक व्यक्ति जिसने रिश्वतें ली हैं, लोगों से क्षमा मांगकर उनकी रिश्वतें वापिस की हैं, किसी का पैसा दबाया हो उसने उसको दु:खी दिल से क्षमा मांग कर उसे वापिस किया है। जो दूसरों को सताते थे उनकी सेवा करने वाले बन गए। माता पिता को सताने वाले उनके श्रवण कुमार पुत्र बनकर उनकी सेवा करने लगे। जो भाई-भाई आपस में लड़ते थे वो एक दूसरे के सच्चे सहारे और मित्र बन गए। जहाँ पति पत्नी घर में नरक पैदा करते थे वो एक दूसरे के सेवाकरी बन गए।

देव समाज में जाति-पाति, स्त्री-पुरुष, गोरे-काले, अमीर गरीब आदि के नाम पर कोई भेदभाव नहीं होता। देव समाज में गरीब, कहलाने वाले अछूत (कि जिन्हें लोग ऐसा कहते थे।) बड़े बड़े पदों पर पहुंचते रहे हैं। देव समाज के बड़े बड़े पदों पर स्त्रियाँ भी आसीन रही हैं। जैसे नाम करण अनुष्ठान, विवाह अनुष्ठान, मृतक अनुष्ठान पुरुष करवा सकते हैं, वैसे ही देव समाजी स्त्रियां भी करवा सकती हैं। देव समाज की स्त्री कर्मचारी देव समाज की बहुत बड़ी बड़ी सभाएं करवाती रही हैं।

देव समाज स्वार्थी लोगों को दूसरों के भले में लगाती है और उन्हें परोपकारी बनाती है।

अब सवाल यह है कि देव समाज की यह सारी विशेषता और निरालापन क्यों है?

देव समाज को पैदा करने वाले उसके संस्थापक का नाम श्री सत्यानन्द जी अग्निहोत्री है, कि जिन्हें उनके अनुयाई भगवान देवात्मा कहते हैं। देवात्मा सच्चाई और भलाई के प्रेमी हैं। वो सदा सत्य बोलते थे, सत्य को भी साफ साफ बिना लाग लपेट के बोलते थे, सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए भिन्न 2 पुस्तकें पढ़ते थे, जो सच्चाई उन्हें मालूम हो जाती थी उसे ग्रहण कर लेते थे। सच्ची प्रतिज्ञा पर अटल रहते थे। अगर उन्होंने किसी को दो बजे का समय दिया है तो दो बजे का मतलब दो बजे होता था, ना कि दो बजकर एक मिन्ट। वो किसी से सच्ची प्रतिज्ञा करके उस पर अटल

रहते थे वे सत्य का प्रचार करते थे, चाहे उन्हें उसकी कितनी ही कीमत क्यों न चुकानी पड़े। उन पर नौ फौजदारी मुकदमें हो गए। लोगों ने उनके विरुद्ध बहुत कुछ लिखा और प्रचार किया परन्तु वे हमेशा सच्चाई का ही प्रचार करते रहे। आप सत्य का ही समर्थन करते थे और हमेशा सच्चाई के साथ खड़े रहते थे और आपने धर्म विषयक सत्यों की खोज की। ठीक इसके विरूद्ध आप झूठ को गहरी नफ़रत करते थे।

आप भलाई के अनुरागी होकर दूसरों का हमेशा भला ही करते रहे और भला ही सोचते रहे। आप पढ़ाई लिखाई के गहरे शौकीन थे। आप बड़ों का उनके सामने और उनकी पीठ पीछे सम्मान करते थे। आप को फूल, पक्षी और पशुओं से बहुत प्यार था। उनकी सेवा करते थे। आप अपने उपकारी माता पिता अध्यापकों आदि की सेवा करते और जिन्होंने आपकी कैसी भी सेवा की हो आप उनकी सेवा करते वा उनके लिए शुभ भाव रखते थे। आपके अन्दर कृतज्ञता, श्रद्धा, अभाव निवारण, कर्तव्य पालन, आत्म सहाय, आत्म सम्मान जैसे भलाई के भाव थे।

आपका जीवन प्रत्येक झूठ और बुराई से पवित्र होने और सच्चाई भलाई का अनुरागी होने के कारण आपके जीवन, आपकी पुस्तकों, आपकी देव समाज, आपके अनुयाइयों के ऐसे प्रभाव हैं कि वो प्रत्येक अधिकारी जन को प्रभावित करके उनमें उच्च परिवर्तन ला देते हैं। आपके ऐसे अद्वितीय जीवन से ही आपकी देव समाज की विशेषता है। इसे हम देवधर्म भी कहते हैं।

गौतम गोनियाना

देव धर्म का निराला पक्ष

देव धर्म एक नवीन और विज्ञान मूलक धर्म है। इस संसार के धर्मों से बिल्कुल भिन्न है। इसके पूजनीय संस्थापक, इसकी शिक्षा, इसके धर्म साधन, इसका लक्ष्य सब भिन्न हैं और यह पूर्ण अद्वितीय है।

संसार के अधिकतर धर्म ईश्वर, अल्ला, वाहेगुरू को लेकर या उसके अवतारों के विशेष प्रतिनिधियों को, देवी देवताओं को लेकर स्थापित हैं। उनका यह विश्वास एक है कि वाहेगुरू वा ईश्वर सर्व-व्यापक है, सर्व ज्ञानी है, सर्व शक्तिशाली है, वह सब का बनाने वाला, पैदा करने वाला या चलाने वाला है। उसके हाथ में सब कुछ है, वही सब कुछ करन करावन हार है। मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं, उसका हुक्म प्रधान है, उसके हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिलता।

यह साधारणत: सब मनुष्यों का विश्वास है कि मनुष्य का सारा जीवन, जन्म से मृत्यु तक ईश्वर पर निर्भर करता है। उसी इच्छा से वह यश, मान प्राप्त करता है या अपमानित होता है, दूध, पुत्र पाता है या उससे वंचित रहता है। पद प्रभुत्व पाता है या साधारण ही रहता है। वही ईश्वर सब का दाता है। "जगत भिखारी फिरत है, सब का दाता राम।"

ऐसा विश्वास रखकर सांसारिक धर्मों के अन्दर ईश्वर या खुदा या देवी देवताओं की स्तुत्ति, अराधना और महिमा के गाने का महत्त्व है। उक्त सब धर्मों के अन्दर जापों, पाठों का,

कीर्तनों, जगरातों, भेंटों का, जय ध्वनि या जयकारों का विशेष स्थान है। यही साधन धर्म समझे जाते हैं, यही भक्ति समझी जाती है। यही पूजा वा धर्म के साधन समझे जाते हैं। ईश्वर या देवी देवताओं की निकटता या कल्पनात्मिक प्रसन्नता प्राप्ति ही लक्ष्य माना जाता है। इस लक्ष्य की पूर्ति से मानव जन्म की सच्ची सफलता समझी जाती है।

देवधर्म की स्थिति इससे पूर्णत: भिन्न है। देव धर्म के सब सिद्धान्त विपरीत हैं और धर्म मानते हैं कि ईश्वर ही सत्य है, संसार मिथ्या है। देव धर्म का मुख्य सिद्धान्त है कि केवल विश्व, नेचर या ब्राह्मण्ड ही सत्य है। नेचर से परे कोई अस्तित्त्व भी नहीं है। वह सब मनुष्य की कल्पना है। देव धर्म मानता है कि केवल नेचर सत्य है, वह सदा से है और सदा रहती है। नेचर में मनुष्य की सेहत, उसके रोग, उसके दुख, सुख उसका यश-अपयश, अमीर गरीब होना, सब नेचर के नियमों पर निर्भर है। उसका जीवन मृत्यु सब नेचर के नियमों के अनुसार होता है। जो नियम जीवन से मनुष्य पूरे करता है वह उसके ही परिणाम भुगतता है।

इसलिए नेचर के नियमों के ज्ञान का देव धर्म में बहुत महत्त्व है। उनका बहुत सम्मान है। केवल जाप के लिए देव धर्म में कोई स्थान नहीं। उसको पूर्ण निरर्थक वा फिजूल वस्तु माना जाता है। मुर्खों और अबोधियों का पागलपन समझा जाता है।

देव धर्म मनुष्य प्रकृति का मुख्य नियम रोशन करता है और उसके प्रचार और प्रसार पर सारा जोर लगाया जाता है। देव धर्म बताता है कि मनुष्य-प्रकृति सुख परायण है। सुख की अनुरागी और दुख के प्रति घृणा रखती है। मनुष्य के सुख अनुराग ही मनुष्य के जीवन योजना के सृजनकर्ता हैं। उसको दुखी, रोगी, गरीब और हानिग्रस्त बनाते हैं। सुख की चाह और लालसा के कारण हर स्थान में मनुष्य अध्यात्मिक रोगी हैं। उन रोगों के कारण अन्धकार ग्रस्त, मिथ्या ग्रस्त, पाप ग्रस्त वा मोह ग्रस्त है। हानि और दुख को प्राप्त हो रहे हैं।

देव धर्म का सारा ज़ोर अधिकारी मनुष्यों को मनुष्य के रोगों या अदना सुखों के दिखाने और मनुष्य को उन अदना सुखों के भयानक बन्धनों से मुक्त कराने में है। कुछ धर्म मनुष्य आत्मा को निर्लेप वा पवित्र मानते है।

देव धर्म मनुष्य आत्मा को सुख परायण और पाप परायण मानता है। उसको पाप ग्रस्त वा मिथ्या ग्रस्त मानता है। सुख अनुराग उसी प्रकार मनुष्य के आत्मा के रोग हैं, जैसे शरीर के अपने रोग हैं। नशा अनुराग आत्मा का रोग हैं, काम अनुराग, धन का अनुचित बन्धन, मान बढ़ाई, प्रशंसा, ईर्ष्या द्वेष यह सब आत्मा के रोग हैं। इन नीच सुख अनुरागों अर्थात आत्मिक रोगों के कारण मनुष्य बेसुध हुआ फिरता है। देव धर्म बताता है कि जो सुख मनुष्य खुशी खुशी लेता है, जिन्हें लेने के लिए वह सर धड़ की बाज़ी लगाए हुए है, वह उसके जान लेवा हैं, नाश करने वाले हैं। देव धर्म मनुष्य की इस उल्टी दृष्टि को दिखाता है। इन नीच सुखों के अद्ना बन्धनों को दिखाना, उनके प्रति जागृत करना, सच्ची होश देना देव धर्म का मुख्य काम है।

बहुत से धर्मों ने या धर्म संस्थापकों ने या पीर पैगम्बरों ने या गुरूओं, अवतारों ने मुनष्य के सही स्वरूप को न समझ कर उसको ब्रह्म स्वरूप, जोत स्वरूप, अशरफ-कुल, मखलुकात, देवत्व का शोला बताया है। उन्होंने

मनुष्य-प्रकृति को रोगी नहीं देखा और न ही बताया है। उल्टा उन्होंने मनुष्य की ईच्छाएं पूर्ण करने का दावा किया है या जाप, सिमरन के ढंग बताए हैं। परन्तु मनुष्य के रोग बढ़ते गए। धर्म बढ़ गए, धर्म स्थान बढ़ गए, पूजा पाठ बढ़ गए, परन्तु मनुष्य का जीवन दुखों और मुसीबतों का घर बन गया। पूजा, पाठों की भरमार किसी काम नहीं आई। जब मर्ज़ की दवा ही उल्टी की जाए तो रोग कैसे जा सकता है।

देवात्मा के भीतर अजब रोशनी आई है। उन्होंने अपनी इस अद्वितीय रोशनी में मनुष्य की प्रकृति को जाना है। उन्होंने यह देखा कि मनुष्य सुख परायण होकर दुखों का घर बन रहा है, वह रोग ग्रस्त है वह दुख और विनाश को प्राप्त हो रहा है।

उन्होंने इस सचाई को भी रोशन किया कि मनुष्य अपने हृदय वा आत्मा के भीतर के सुख अनुरागों वा रोगों को नहीं देख सकता। उन रोगों का भयानक परिणाम अपने आप नहीं देख सकता। न मनुष्य अपने आप उन रोगों से मुक्त हो सकता है और न ही वह अपने आप उच्च भावों को पैदा करके उच्च हो सकता है।

जैसे रोशन दिमाग ही औरों के दिमाग़ों को रोशन कर सकते हैं वैसे ही आत्मिक रोगों से निकलने के लिए देवात्मा की रोशनी की मनुष्य को आवश्यकता है। वह अपने आप उच्च भाव पैदा करके उच्च भी नहीं बन सकता।

देवात्मा की रोशनी में ही वह अपने रोगों और उनके भयानक रूप को देख सकता है अपने रोगों के प्रति जागृत हो सकता है। विवेक पा सकता है। उनके प्रति फिकरमन्द हो सकता है।

देव धर्म अधिकारी आत्मिक रोगियों को बेसुधि और बेहोशी से देवात्मा की रोशनी से जगाने का लासानी काम करता है। इसमें रोगों का फिकर पैदा किया जाता है। देवात्मा की शक्ति पहुँचा कर अधिकारी मनुष्यों को उन रोगों से मुक्त होने के साधनों में लगाया जाता है। यह निराला कारज देव धर्म कर रहा है।

जबकि वाम मार्गी आत्मिक रोगों को ही धर्म समझ कर अपना नाश करने पर ज़ोर दे रहे है। वह पाँच 'म' धर्म मनाते हैं। उनकी महानता बताते हैं। वह है मांस, मदिरा, मैथुन, माजून और मछली आदि। कैसा अन्धेरा! कैसी उल्टी दृष्टि!!

कुछ धर्मों में नैतिकता का पक्ष सराहनीय है एक-एक बुराई का विरोध भी है, परन्तु नाम और जाप का बहुत बड़ा महत्व समझा जाता है। मनुष्य के आत्मा के रोगों को नहीं देखा उन्हें निर्लेप स्वीकार कर लिया।

देव धर्म का मुख्य कारज ही देवात्मा की रोशनी के द्वारा आत्मा को दिखाना, आत्मा के रोगों को दिखाना, आत्मा के पतन वा नाश को दिखाना, आत्मा की कुशल वा सेहत को दिखाना है। मनुष्य का उसके रोगों से निकलने का फिकर पैदा करके, उनसे मुक्त होने के प्रयास में लगाना है।

देव धर्म मनुष्य जीवन के भीतर आश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन पैदा करता है। जबकि अधिकतर धर्म जाप पर ज़ोर लगाकर रखते हैं।

देव धर्म वास्तव में मनुष्य जीवन को सुधारता है। वह सम्बन्धों में मेल पैदा करता है। स्वार्थ के नाश पर ज़ोर देता है। परहित में लगाता है।

अन्य धर्मों ने मनुष्य के पापों से मुक्ति

के लिए बिल्कुल मिथ्या साधन बताए हैं। गंगा में नहाने से जाप करने से, राम का नाम लेने से पाप धुल जाते हैं, और मनुष्य पवित्र हो जाता है। ज़्यादातर दुकानदार सवेरे घर में धूप बत्ती जलाकर, आरती करके जाते हैं और फिर बेईमानी की गतियां करते रहते हैं। क्या इससे उनकी बेईमानी धुल सकती है?

देव धर्म बताता है कि पाप न धुलने की चीज़ है और न क्षमा करने की चीज़ हैं। देव धर्म पाप करने के कारण बताता है, हमारे भीतर पाप करवाने की शक्तियां हैं, उन शक्तियों को जानने और उनसे उद्धार पाने के साधन करे बिना कोई पाप क्षमा नहीं होता। पाप क्षमा करने की चीज़ नहीं, उससे उद्धार पाने की आवश्यकता है। देव धर्म के बानी (संस्थापक) ने मनुष्य के भीतर की पाप करवाने की शक्तियों का ज्ञान देकर हज़ारों पापियों के जीवन को बदलकर उन्हें नेक इन्सान बनाया है।

देव धर्म, आत्मिक होश, आत्मिक रोगों का ज्ञान, रोगों का फिकर पैदा करता है। उनसे मुक्त होने के लिए और आत्मिक सेहत को प्राप्त करने के लिए संग्राम में डालता है। यही उसका मुख्य उद्देश्य है जो संसारिक धर्मों से पूर्णता भिन्न है।

- बलदेव सिंह

मानवता का निर्माण

देव धर्म के प्रवर्तक श्री देवगुरू भगवान ने अपने देव जीवन के देव प्रभावों के द्वारा मानवता में उच्च परिवर्तन लाने का सर्वश्रेष्ठ कार्य शुरू किया है। उन्होंने फ़रमाया है - "मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग चाहता हूं। मैं इस पृथ्वी पर वह दीन और धर्म लाना चाहता हूँ कि जो इसी दुनियां में सब प्रकार के पापों और बुराइयों का नाश करता हो और जो इसी दुनियां में ऐसे सच्चे और भरोसे के योग्य आत्मा उत्पन्न करता हो, कि जिनके उत्पन्न होने से मनुष्य जीवन सब प्रकार से मीठा और सुखप्रद बन सकता है।"

वह जिस प्रकार का स्वर्ग इस पृथ्वी पर ला रहे हैं उसके हजारों में से चंद दृष्टांत हम नीचे दे रहे हैं :-

एक जन जो पहले..... धर्म से संबंध रखते थे, बताते हैं कि हमारे घर में ऐसा नरक रहता था और हम सब आपस में ऐसे दुखी रहते थे कि जिसका ब्यान नहीं हो सकता। मेरी धर्मपत्नी घर के कलह - कलेश से दुखी होकर और घुल घुलकर मर चुकी है। घर में जो स्त्रियाँ मौजूद हैं वह हमें इतना दुःखी करती थी कि हम उनके मरने की कामना करते रहते थे। कुछ दिन हुए मेरी माता जी बीमार हो गईं। वह चारपाई से उठ न सकती थीं, हमने उस मौके को उन्हें मार देने के लिए गनीमत समझा और आपस में यह सलाह की कि हम भाई इन्हें छोड़कर और रिश्तेदारी में चले जाते हैं, कुछ दिन के बाद आप ही भूखी प्यासी मर जाएगी, और हमने ऐसा ही किया। जिस रिश्तेदार के पास मैं गया था, वह देव समाज की संगत में आते जाते थे, वह मुझे देव समाज के एक मैम्बर के घर ले गए। उस मैंम्बर ने कुछ हितकर बातचीत की और समाज की किताब में से कुछ पाठ करके सुनाया, जिसका मेरे दिल पर अच्छा असर हुआ। दोपहर को उनके घर

सभा हुई। मैं उस सभा में शामिल हुआ। शायद यह सभा माता पिता के सम्बन्ध में ही थी। इस सभा में बैठकर मुझ पर जादू का असर हुआ। ज्यों-ज्यों सभा सुनता था, त्यों त्यों अपने घर की नारकीय अवस्था और अपना पापी जीवन सामने आता था। सभा में मैंने महसूस किया कि ऐ चंडाल! तूने कितना महापाप किया कि अपनी जन्मदाता माँ को पीने के लिए पानी न दिया, तूने तो अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर ली। यहाँ से भाग और यदि तेरे जाने तक तेरी माता प्यास से तड़प-तड़पकर मर न गई हो, तो उसको बचाने की फिकर कर। सभा खत्म होने के बाद मैंने माता के संबंध में नीचता का हाल सभा परिचालक को सुनाया और फिर सीधा अपने गाँव में भागा आया जो वहाँ से बीस मील दूर था। सौभाग्य से मेरी माता जीवित थीं। मेरी माँ प्यास से सिसक रही थीं। मैंने उनको पानी पिलाया और दवाई का प्रबंध किया। कई दिन के यत्न से वह बच गई। यदि मुझे देवात्मा गुरू के प्रभाव न मिलते, तो इसमें कोई शक नहीं कि मेरी माता जी की प्यास से तड़प-तड़पकर जान निकल जाती और मैं माँ का हत्यारा प्रमाणित होता।

(यह जन उसके बाद अपनी माता जी की सेवा करने लगे, उनको देखकर उनके भाईयों और अन्य घर वालों पर ऐसा असर हुआ कि वह भी माता जी की सेवा करने लगे।)

एक और व्यक्ति का परिवर्तन :

घमियारा जिला फिरोज़पुर के रहने वाले पण्डित नेत राम जी थे। देव समाज में आने से पहले ब्राह्मण होकर भी यह न केवल स्वयं शराब पीते थे, बल्कि औरों को भी पिलाते थे और उनकी ज़िन्दगियां भी बर्बाद करते थे। मांस खाते और कई तरह के मन्द कर्म करते थे और जिन्दगी के लिहाज़ से इतने पतित हो चुके थे कि गांव के लोग इनका गांव में ठहरना और अपने घर में आने देना बहुत खतरनाक बोध करते थे। वह स्वयं लिखते हैं-मेरा दुर्भाग्य कि मेरे माता पिता का साया मेरे सिर से छोटी उमर में उठ गया, वह अपने पीछे काफ़ी ज़मीन छोड़ गए थे, जिसकी आमदनी से मेरा भली भान्त गुज़ारा हो सकता था, परन्तु गांव के बुरे लोगों की संगत में पड़ कर मैं पांचो ऐब शरई बन गया।

(1) मुझे चोरी की आदत पड़ गई। जिस किसी की दुकान या घर पर जाता, तो मौका पाते ही कोई न कोई चीज़ उठा लाता। इसलिए गाँव का कोई आदमी मेरा अपने घर या दुकान पर आना जाना पसंद नहीं करता था। सब लोग मुझे चोर कहकर पुकारते थे।

(2) मेरी शराब पीने की आदत बढ़ गई। फिर मैंने शराब का ठेका खोल लिया। एक पण्डित मुझे गीता सुनाने आया करते थे। वह मुझे गीता का पाठ सुना जाते और मैं उन्हें एक पौआ पीने को दे देता। एक जन ने मुझ से कहा कि नेत राम! तूने ब्राह्मण होकर शराब का ठेका क्यों खोल रखा है? मैंने कहा मैं ज़मीन जायदादों का मालिक हूँ। तेरे जैसे कंगाल ने शराब का ठेका कहां खोलना था?

(3) मेरा चाल-चलन बहुत खराब हो गया था। इस महा पाप के कारण मैंने अपना और औरों का इतना नुकसान किया है कि उसे सामने लाकर बदन के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। लोगों की बहू बेटियों की इज्ज़त मुझ कहलाने वाले ब्राह्मण और वास्तव में चण्डाल से सुरक्षित न थी। मैं एक जन के घर से उसकी औरत को निकाल लाया। कितने ही समय तक उसको अपने घर में डाले रखा।

(4) सिगरेट और हुक्का पीने की बुरी आदत मुझे लग चुकी थी। मैं जुआरी भी बन गया था। जुए की बुरी आदत के वश में होकर मैं अपना घर बार लुटा रहा था। इस प्रकार नाना पापों में ग्रस्त होकर खुद तबाह हो रहा था और औरों को तबाह कर रहा था। साथ साथ मेरे कहलाने वाले धर्म के साधन भी चल रहे थे। जनेऊ और चोटी भी रखता था। गीता का पाठ करता था। गोपाल सहस्त्र नाम और विष्णु सहस्त्र नाम का जाप करता रहता था। प्रयाग राज, गंगा में एक महीना लगातार स्नान किया। वहां साधुओं की संगत में सुलफ़ा पीना सीख लिया। गया जी में पित्रों की मुक्ति के लिए पिण्ड भराए। हरिद्वार में कई बार महीना महीना भर रहा। वहाँ पण्डे मुझे शराब लाकर दे देते थे।

ऐसे हालात में मुझे देव समाज की संगत का पता लगा। लगातार संगत में बैठते बैठते मुझे महसूस हुआ कि मेरे चारों और ज़हरीले असर भरे पड़े हैं और उनमें रह कर मेरी मौत यकीनी है। मैं उच्च संगत में रह कर ही बच सकता हूँ।

पहले जिन पापों को खुशी खुशी किया करता था, धीरे धीरे उन पापों के प्रति घृणा पैदा होने लगी। कई पिछले पापों का परिशोध करने के साधन शुरु हो गए।

आत्मा तो क्या मुझे शरीर की भी कोई होश न थी। पहले मैं स्वार्थ का जीवन व्यतीत करता था। अब सत्संग में रहकर दूसरों की सेवा करना मुझे बहुत अच्छा लगता है। सुबह चार बजे उठ कर विकासालय में घण्टा बजाने की डयूटी मैंने ली हुई है। लंगर में सत्संगियों को खाना खिलाने की भी डयूटी मैंने ली हुई है। आने वाले सत्संगियों के लिए चारपाइयां बुनता हूँ और बिस्तरों का सारा प्रबन्ध मेरे हाथ में है। जब अवसर मिलता है तो बाहर जाकर प्रचार का काम भी करता हूँ। अपने गाँव और मकान के साथ इतना मोह बन्धन था कि उनको छोड़ कर मैं बाहर कहीं जाना दूभर महसूस करता था। सत्संग में रहकर मेरा यह बन्धन कट गया है। मेरे दिल में तो अब यही आता है कि मैं भगवान के दर पर पड़ा रहूँ। जो लोग पहले मुझ पर एतबार नहीं करते थे, वह अब कहते हैं कि हमारी लड़की को ले जाओ और मोगा स्कूल (देव समाज गर्ल्स स्कूल) में दाखिल करा दो और मैं ऐसा ही करता हूँ। एक बार मेरा एक पुराना दोस्त मुझे मिलने आ गया। उस को पता नहीं था कि मैं बदल चुका हूँ। उसने कहा कि नेत राम! तेरी कुण्डी सोटा कहां है? हमने भंग रगड़ कर पीनी है। मैंने कहा कि जिस कुण्डी सोटे में भंग रगड़ी जाती थी, वह मैंने उठाकर बाहर फेंक दिया है, और वह नेत राम मर गया है जो भंग पीया करता था। अब एक नए नेत राम ने जन्म ले लिया है। मेरे गुरु धन्य हैं जिन्होंने मुझ जैसे शराबी, कबाबी, नशई, जुआरी, चोर और बदचलन को बदल दिया है। मैं तो आप तबाह हो रहा था और दूसरों को तबाह कर रहा था। एक समय था जब मैं अपने गांव की गली से गुज़रता था, तो लोग कहते थे कि अपने घर के दरवाज़े बन्द कर लो। नेत राम राक्षस आ रहा है। गुरू महाराज ने मुझे बचा लिया। अपने ही एक बनाए भजन में अपने जीवन की इस परिवर्तन कथा को मैंने इस प्रकार वर्णन किया है -

देव गुरु जी दी शरण न औंदा, पौंदा दुख घनेरे मैं।
दारू पींदा मुरगे खांदा, जुए विच घर बार लुटांदा,
मारिया वैलां दा मर जांदा, औंदा न जे दर तेरे मैं।
लेखा ठप्प नुकसान नफ़े दा,आशिक बणिया सी हुक्केदा,
भंग शराब अफ़ीम सुलफ़े दा, पाले प्यार बथेरे मैं।

आलस्य दा मैं बड़ा पुजारी, धरती बेच खा गया सारी,
हो जांदा बस नंग भिखारी, मंगदा टुकड़े टेरे मैं।
काम अनुराग सी सिर असवार, मत बुध उस सी छड्डी मार।
होंदा फिरदा सी नित ख़्वार, विच कजरां दे डेरे मैं।
मैले, पापी कर्म कमाके, लोकां नूं तकलीफ़ पहुंचा के,
रहंदा एक दिन जेलीं जाके, देंदा कोल्हू गेड़े मैं।
पर हानि दी भैड़ी आदत, करदी डाहडी मेरी दुर्गत,
हलक गए होए कुत्ते दे वत, भौंदा चार चुफेरे मैं।
खोटी चिन्ता क्रिया कर कर, भरया ज़हर आत्मा भीतर
चलना धर्म मार्ग कीता दूभर, कण्डे आप बखेरे मैं।
जाले नीच रागां दे तन तन आप फंसाई अपनी गर्दन।
बणया अपना जानी दुश्मन, पाले शेर बघेरे मैं।
खुलदा भेद न मिथ्या मतां दा, झूठे देवी देवतियां दा।
ऐहना मगर लग ठोकरां खांदा, रूलदा विच हनेरे मैं।
पर हुण पलट गया है पासा, मेरे बचण दी हो गई आशा,
धर्म संगत विच हो गया वासा, लाए इस थां डेरे मैं।
हो गए मैल विकार सफ़ाया, पर हानि तों दिल घबराया,
पर हित लई चित्त ललचाया, पाए लाभ घनेरे मैं।
उच्च धर्म संगत अस्थापक, रख के चरणी तेरे मस्तक,
बन के तेरे दर दा भिक्षुक, गावां नित गुण तेरे मैं।

नोट : एक बार पंडित नेत राम जी एक कर्मचारी के साथ प्रचार को जा रहे थे। बस में सवार थे, वहां एक अन्धा आदमी कटोरा लिए भीख मांग रहा था, जब उन्होंने उसे देखा तो कर्मचारी को बताया कि श्रीमान जी यह मेरा साथी है, हमने इक्ट्ठे सब पाप किए हैं, अगर मुझे देव समाज की संगत न मिलती तो ऐसे ही मैं भीख मांगता फिरता, क्योंकि बहुत सारी ज़मीन बेच दी थी। जो रह गई थी, वह देव समाज की कृपा से बच गई।

उन्होंने वह ज़मीन बेचकर समाज में पैसे जमा करवा दिए। उसके ब्याज से वह अपना गुज़ारा करते और सेवा में रत रहते।

नीच रुचियों की कैद और उनसे निकलने की आवश्यकता

जेलखाने का कैदी हाथ पांव रखता है और उनके द्वारा प्रतिदिन नाना प्रकार के काम भी करता है। परन्तु वह सब काम करके और कई बार लगातार बरसों तक काम करके भी वह अपने लिए या अपने घर वालों के लिए कुछ नहीं कर सकता। जैसे वह जो काम करता है, वह जेल के अफ़सरों के हुक्म से करता है। इसका बहुत कीमती समय गुज़रता जाता है, वह इस समय में काम भी करता है। बहुत मेहनत से काम करता है। तो भी अफ़सोस कि इसको उससे प्राप्त कुछ नहीं होता। यह क्यों? यह इसलिए कि वह ऐसे कर्म कर बैठा है कि जिनसे वह पराधीन हो चुका है। इसलिए अब यह उसके अधिकार में नहीं है कि वह किसी दिन काम न करे। काम उसे करना पड़ता है और प्रतिदिन करना पड़ता है, मगर इस काम को करके उसे मिलता कुछ नहीं, केवल उसके शरीर को ढकने के लिए बहुत मोटा-सोटा कपड़ा मिलता है और अगले दिन उसके जिस्म को काम के लिए जीवित रखने के लिए रूखी सूखी रोटी मिलती है कि जिससे कई बार उसका पेट भी मुश्किल से भरता है। वह बेचारा चाहे जितना काम करे और चाहे जितनी मेहनत करे और कष्ट उठावे, और लगातार बरसों तक काम करे परन्तु अन्त में जब उसे वहां से छुट्टी मिलती है तो उसके अपने या उसके बाल-बच्चों

के ख़र्च के लिए कुछ खास नहीं होता। वह सालों तक परिश्रम करने, जेलखाने वालों की झिड़कियां खाने के बाद अपनी इतनी उमर गंवा देता है। कैसी शोकप्रद अवस्था! परन्तु जेलखाने के इस कैदी से भी सैंकड़ों गुणा बढ़कर शोकप्रद और दुखप्रद अवस्था उन लाखों और करोड़ों मनुष्यों की है कि जो यद्यपि देखने में किसी जेलखाने के कैदी नहीं हैं परन्तु वास्तव में उनसे बहुत बढ़कर मोटी, मजबूत, निहायत सख़्त और यन्त्रणा देने वाली बेड़ियों से जकड़े हुए हैं। यह बेड़ियाँ उनकी शारीरिक वासनाओं और पाश्विक रुचियों की बेड़ियाँ हैं जो कि उन्होंने आप खुशी खुशी पावों में डाली हैं और कई सूरतों में ऐसे भयानक रूप से डाली हैं कि उनसे उनकी मोक्ष की साधारणत: कोई आशा नज़र नहीं आती। यह बेचारे बाहर से आज़ाद होकर भी बहुत सी सूरतों में उच्च कोटि के विद्वान, स्वतन्त्र और कई सूरतों में दूसरों के शासक कहला कर भी अपने आपके शासक नहीं हैं। इसलिए वह अपने शरीर को और दिलो - दिमाग़ को किसी ऐसी चिन्ता या क्रिया में नहीं लगाते कि जो उनके अपने अस्तित्त्व की सच्ची भलाई का मार्ग दिखाने या उस मार्ग पर उन्हें ले जाने का असर रखती हों, बल्कि इसके विरूद्ध वह दिन रात जो काम करते हैं उससे केवल यही नहीं कि सिवाय अपनी शारीरिक आवश्यकताएँ भली या बुरी तरह पूरी करने के उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता, बल्कि उनके धर्म भावों की जो पहली पूंजी उनके पास थी, वह भी बराबर दिन प्रतिदिन छिनती जाती है।

यदि पहले बाल्यकाल में सरल और सत्य बोलने वाले थे, तो समय बीतने के साथ अब वह कई सूरतों में मक्कार और परले दर्जे के झूठे बन गए हैं। यदि वह पहले अपने दिल में कुछ रहम या दया का भाव रखते थे और दूसरों का अधिकार छीनने में अपने भीतर कोई रोक या झिझक महसूस करते थे तो अब आयु बढ़ने के साथ साथ वह परले दर्जे के निर्दयी और ज़ालिम बन गए हैं। और किसी का दुख दर्द और किसी की आहोज़ारी उन्हें अत्याचार करने से नहीं रोकती। यदि वह छोटी आयु में नेक और हानि रहित अस्तित्त्व थे तो बड़े होकर परले दर्ज के ज़ालिम और निहायत ख़ौफनाक भेड़िए बन जाते हैं।

जेलखाने के कैदी की तरह काम तो यह भी बहुत करते हैं और कई सूरतों में उनकी अपेक्षा बहुत अधिक कीमत का काम करते हैं और बहुत से उनमें से विद्वान् होने के कारण सोच विचार करने और तत्त्व निकालने की भी बहुत बढ़ी हुई शक्तियाँ रखते हैं, परन्तु उनका वह सब काम करना और कई दशाओं में हज़ारों और लाखों रुपए मासिक का काम करना और उनकी वह सब कीमती शक्तियाँ उनके अपने प्रकृत हित के लिए कोई काम नहीं करती। बल्कि जिन रुचियों और भावों के वह कैदी हैं उनकी ही तृप्ति के काम आती हैं। एक एक वेश्या जैसे थोड़े से शारीरिक सुख का लालच देकर एक एक बहुत सुन्दर नवयुवक के बहुत डील डौल वाले शरीर और उसके दिल व दिमाग़ और उसके पैसे और रुपए को अपनी सेवा के लिए खींच लेती है और वह नौजवान अपने दिल व दिमाग़ को अत्यन्त भयानक और घातक बीमारियों का शिकार हो जाने के लिए बेतहाशा कुर्बान कर देता है। ठीक वैसे ही लाखों और करोड़ों मनुष्य अपनी शारीरिक रुचियों और अहं

सम्बन्धी भावों के इस क़दर कैदी हो चुके हैं कि मानो उनके शरीर, जान और दिल व दिमाग़, माल व जायदाद सब उन्हीं की सेरी के लिए बिक चुके हैं। और उन पर उन्हें ऐसा कोई अधिकार नहीं रहा कि वह उनमें से, किसी वस्तु को अपने काम में ला सकें। उनके हाथ पांव, हाँ उनका सारा शरीर ही उसका अपना हित शारीरिक रुचियों और अहं सम्बन्धी भावों और उनकी तृप्ति के लिए उनके हाथों में बिक चुका है, वह जिधर चाहें उनके हाथों और पावों को चलावें। उनका अपना कोई अधिकार नहीं कि इसमें कोई रोक डाल सकें। यहाँ तक कि यदि एक एक नवयुवक को उपरोक्त भयानक गुलामी में रहते रहते कोई ऐसा रोग भी लग चुका हो कि जिससे उसका चिकित्सक उस ऐसी क्रिया से परहेज़ बतावे कि जिससे हानि पहुँचती और उसकी जान को खतरा होता हो तो वह उसका गुलाम हो चुकने के कारण यहाँ तक बेबस है कि अपने सामने मौत को मुंह खोले देखकर भी अपनी एक एक नीच वासना के अनुसार चलने से रुक नहीं सकता और जान दे देता है। ऐसी भयानक और अत्यन्त शोकप्रद गुलामी में लाखों और करोड़ों मनुष्य फँसे हुए हैं, परन्तु मज़ा यह है कि ऐसे बहुत से गुलाम अपने आप को स्वतन्त्र और आज़ाद समझते हैं परन्तु वास्तव में उनकी जेलखाने के कैदियों से भी बहुत बदतर दुर्दशा है। उनसे भी बढ़कर दुर्दशा इसलिए भी है कि जेलखाने का कैदी-सिवाय उसके कि कोई हद दर्जे का पलीद और पागल हो चुका हो आम तौर से अपनी इस कैद की अवस्था को बुरा समझता है। जेलखाने में रहना पसन्द नहीं करता और वहां से निकलना चाहता है। परन्तु इन दूसरी प्रकार के लाखों और करोड़ों कैदियों में से ऐसे होश वाले मनुष्य कितने हैं कि जो अपनी कृपापात्र अवस्था को देखते हों और उसे नापसन्द करके उससे निकलने के आकांक्षी और बेज़ार दिखाई देते हों? बहुत कम। वह गुलामी में रहकर अधिक गुलाम, अधिक अन्धे, अधिक दुखी और अधिक कष्टदायक अस्तित्त्व बन जाते हैं और अत्यन्त शोक! कि उन्हें कुछ पता नहीं कि उनकी ऐसी दुर्दशा होती जाती है। मनुष्य बुद्धि रखकर, बहुत कुछ सोचने और समझने की शक्तियाँ रख कर उच्च विद्या पाकर उन्हें यह बिल्कुल पता नहीं होता कि वह गुलाम हैं और दिनों-दिन अधिक से अधिक गुलाम होते चले जाते हैं। उनकी समझ, उनकी विद्या उन्हें कुछ नहीं बताती और उन्हें इस गुलामी से निकालने के लिए कुछ भी सहायक नहीं होती। उल्टा उनके भीतर और बाहर की सारी शक्तियां उनकी गुलामी को बढ़ाने में सहायक होती हैं। ओह! किस क़दर कृपापात्र अवस्था!! जेलखाने के इस कैदी की कि जो जेलखाने के मकानों को अपने रहने के लिए पक्के महल, और लोहे की हथकड़ियों और बेड़ियों को अपने लिए आभूषण और इसकी निगरानी के लिए जेल के जो सिपाही रखे हुए हैं उन्हें अपना अर्दली समझकर खुश होता हो, और जेलखाने में रहना अपने लिए गौरव की वस्तु समझता हो। मुबारिक हैं वह जिन्हें अपनी वासनिक गुलामी का सच्चा ज्ञान हो गया हो और जो उससे निकलने और सच्ची आत्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के आकांक्षी होकर उसके लिए आवश्यक संग्राम करते हों।

(जीवन पथ दर्शक)

मैं भी हूँ, कोई और भी है।

मनुष्य अकेला नहीं। वह संबंधों में जुड़ा हुआ है। सबसे गहरा संबंध उसका मनुष्य मात्र के साथ है। दूसरे दर्जे पर उस का संबंध पशु जगत और उस से नीचे के जगतों के साथ है। इन संबंधों से मनुष्य अपना पीछा नहीं छुड़ा सकता। इन्हीं संबंधों के जादू से वह जन्म लेता है, इन्हीं के कारण उन्नति करता है, पतित होता और मृत्यु को प्राप्त होता है। शारीरिक दुनिया को छोड़कर आत्मिक दुनिया में जिन भावों से मुनष्य नीच बनता या पतित होता या विनष्ट होता है, वह सब भाव मनुष्य के नीच सुख अनुराग और नीच घृणा भाव हैं। इन भावों की उत्पत्ति भी मनुष्य के हृदय में नाना संबंधों में होती है। इन्हीं भावों के अधिकार से मनुष्य अपनी सुधबुध खो देता है, और मानों उसके हृदय का दीया बुझ जाता है, और अन्धकार छा जाता है। इस अन्धकार की अवस्था में वह नाना सम्बन्धों में हानिकारक और दुखदाई प्रमाणित होना शुरू करता है। उसके हृदय के दीए के बुझने से उसमें एक बड़ा भारी परिवर्तन जो आता है, वह यह कि वह औरों के सम्बन्ध में बिल्कुल बेसुध हो जाता है और अपनी "मैं" का पूर्ण दास बन जाता है। औरों की हस्तियों का सम्मान करने की बजाए वह औरों को ठुकराता है और अपनी इच्छा का इस कदर प्रेमक बन जाता है, कि उसको पूरा करना ही अपने जीवन का लक्ष्य समझता है, चाहे उसकी इच्छा को पूरा होने से सारी दुनिया का नाश हो जावे। मैंने एक सच्ची घटना पढ़ी थी, कि एक कसाई एक बहुत बड़े बलवान बछड़े को जिव्हा करना चाहता था। वह उसको जिव्हा खाने में ले गया। ज्यूंहि उस बछड़े ने जिव्हा खाने में पांव रक्खा, त्यूंही उसने वहां से भागने की कोशिश की। कसाई को बहुत क्रोध आया, कि यह कम्बख्त बछड़ा मेरी इच्छानुसार क्यों नहीं चलता? उसने दो तीन आदमियों को बुलाया। वह डंडा लेकर आए और बछड़े को पकड़ कर जिव्हा खाने में ले गए और कसाई क्रोध से भरकर इस कदर आपे से बाहर हो गया, कि उसने बछड़े को कत्ल करने में भी बड़ी पिशाच लीला दिखलाई। फल क्या हुआ? कसाई अधिक जालिम हो गया। बछड़े को अनुचित दुख दिए गए और उसकी जान ले ली गई। और उस का मांस जिन-जिन घरों में भेजा गया, उन सब घरों के मांस खाने वाले जन दस्तों और कै से बीमार हो गए। जब पुलिस ने इस मामले की पड़ताल की, तब यह सारी घटनाएं प्रगट हुई कि कसाई ने बछड़े के साथ अपने नीच भावों से परिचालित होकर जो अत्याचार किया, उससे उस का सारा मांस जहरीला बन गया। अब कसाई ने अपनी नीच इच्छा शक्ति में बछड़े को प्रतिबन्धक पाकर उसे अनुचित रुप से पीटा और कत्ल किया। उसके भीतर बछड़े के लिए कोई दया भाव न था।

लाहौर में एक दर्दनाक घटना हुई थी। एक बहुत बड़े आदमी का बच्चा गुम हो गया। तीन चार दिन के पश्चात उसकी लाश मिली। पुलिस ने खूनी की तलाश करनी शुरू कर दी। खूनी मिल गया। वह खूनी इस बड़े आदमी का नौकर था। इस नौकर और एक और बुरे जन ने इस मासूम बच्चे के साथ अपना मुंह काला

किया। बच्चा नहीं मानता था, तो उसे पीटा गया। जब उस लड़के ने रोते चिल्लाते हुए कहा, कि मैं अपने पिता को सब कुछ बताऊंगा, तब उसको कत्ल कर दिया गया। उन दोनों खूनियों के हृदयों में काम सुख अनुराग का महा नीच भाव था। वह उस को तृप्त करना चाहते थे। लड़के ने उसका साथ न दिया, इस पर इस बेगुनाह लड़के को पीटा और कत्ल भी कर दिया। किसी हस्ती के सम्बन्ध में जब कोई जन सम्मान भाव नहीं रखता या उसे क़दर की चीज़ नहीं समझता और अपनी एक या दूसरी नीच रूचि के अधिकार में होता है, तब उसके सम्बन्ध में पापी बन जाता है। अन्य हस्तियों के सम्बन्ध में सम्मान वा सद्भाव को खो देना पाप जीवन का बीज बोना है।

एक और जन की कथा है कि उसने अपने मालिक से कोई निवेदन किया। शायद अपना वेतन बढ़ाने या किसी और काम के लिए निवेदन किया। मालिक ने उसकी प्रार्थना न मानी। उस नौकर ने अपनी इच्छा को पूरा होता न देखकर और अपने द्वेष भाव के वश होकर मन में यह ठान लिया कि अब मालिक को ख़त्म कर देना है और उसने ऐसा ही किया। वह अपने मालिक को और उसकी पत्नी को जो दोनों ही बेगुनाह थे, कत्ल करके भाग गया।

इस प्रकार जब मनुष्य के हृदय में और हस्तियों के सम्बन्ध में सम्मान और सद्भाव नहीं रहता और स्वार्थ का पूर्ण अधिकार हो जाता है, तब पाप अग्नि भड़क उठती है। और कई बार खानदानों के खानदान और कौमों की कौमें उजड़ जाती हैं। इस पिछली जंग में जो हिटलर ने दुनिया में कोलाहल मचाया और करोड़ों जानें नष्ट हो गई, उसमें भी मूलत: यही बात थी, कि वह अपनी कौम के सम्बन्ध में स्वार्थ भाव से भर कर इस योग्य ही न रहा, कि और जातियों की हस्ती के लिए सम्मान या सद्भाव रखे। इसलिए उसने और जातियों को खूब लताड़ना शुरु किया और यह साबित कर दिया, कि मनुष्य की बुरी प्रकृति की कोई सीमा नहीं। जब मनुष्य की बुरी प्रकृति भड़क उठती है, तब इस कदर अन्धेर मचा देती है, कि मानों प्रलय लाने का काम करती है। अब इस भयानक प्रकृति की कुछ न कुछ अनुभूति दुनिया में भी हो रही है। दुनिया पुकार उठी है, कि जब तक एक दूसरे की हस्ती का सम्मान न करेंगे और अपनी "मैं" के ही दास बन जाएंगे और रहेंगे, तब तक बुराई का पूर्ण राज्य रहेगा। यह शुक्र है कि कहीं - कहीं इतनी रौशनी चमक रही है। परन्तु मनुष्य आगे सोचने की कोशिश नहीं करता कि वह ज्योति कहां है कि जो इस भयानक दृश्य को भयानक रुप में दिखावे और मनुष्य को यह अनुभव करावे, कि तुम्हारा मनुष्य मात्र और अन्य जगतों के साथ घनिष्ठ संबंध है और इस संबंध के कारण तुम्हारा यह कर्तव्य है, कि तुम नाना सम्बन्धों में अपनी "मैं" की गुलामी से निकल कर पर के बोधों को पैदा करो और पर की सेवा में ही तृप्ति लाभ करो। शोक! कि यह ज्योति दुनिया में वर्तमान नहीं है और जिस आर्विभाव में इस ज्योति ने प्रकाश पाया है, उस अद्वितीय आर्विभाव का मनुष्य को अभी ज्ञान नहीं है। इस देव ज्योति का प्रकाश देवात्मा में हुआ है। और इस अति विचित्र देव ज्योति का तुज़ुरबा सैकड़ों और हज़ारों को हुआ है। वह अपने तज़ुरबे की बुनियाद पर यह साक्षी देते हैं, कि

इस ज्योति के प्रवेश करने पर हमें पाप जीवन भयानक बोध होता है और हमारे हृदयों में पाप जीवन के लिए उच्च घृणा उत्पन्न होनी शुरु होती है। जब जब मनुष्यों ने नीच जीवन के भयानक फलों को चख़ा है, तब बहुत सारे मनुष्यों के भीतर यह व्याकुलता भी तब पैदा हुई है, कि कोई मनुष्य मात्र को नीच जीवन से बचाए। यह व्याकुलता ज्यों - ज्यों बढ़ती जावेगी और व्याकुल हृदयों के भीतर ज्यों - ज्यों देव ज्योति प्रवेश करेगी, त्यों - त्यों देव ज्योति की महिमा का प्रचार होता जाएगा और धीरे - धीरे मनुष्य मात्र इस देव ज्योति के पाने के लिए ज्योति दाता का दर खट खटाएगा। देव ज्योति दाता एक मात्र सत्य देव भगवान देवात्मा ही हैं और वहीं सत्य धर्म के प्रकाशक और प्रचारक हैं । इसलिए उन से जुड़कर सत्य धर्म लाभ करने की मनुष्य को सदा ही ज़रूरत रहेगी।

- पी. वी. कनल

जीवन पथ के राही दिक्कतों से नहीं घबराते

जिनके विषय में मैं लिखने जा रही हूं, उनका नाम माननीय बहन सत्यवती जी सीकरी था, उनकी शादी माननीय श्रीमान गिरवर प्रसाद जी से हुई तो वह सत्यवती शर्मा बन गई। उन्होंने बहुत से भजन लिखे, गाए, प्रचार किया वह बहुत उच्च कोटि का जीवन रखती थी और जब उन्हें किसी सच्चाई का पता लग जाता, तो वह चट्टान की तरह अटल हो जाती थी। सेवाकारी इतनी कि कोई भी विपदा उनके इर्द गिर्द आती, तो अस्थमा की मरीज़ होते हुए, वह पूरी शिद्त से सेवा में जुट जाती। वह रंगपुरी में देहली के पास थोड़ी दूरी पर रहती थी, इसलिए मैं देहली जाती रहती थी, तो उनको मिलती, वह बहुत स्नेह देती और हमेशा यह कहती कि आप श्रीमान जी की ज़िम्मेवारियों को सम्भालकर श्रीमान जी को गुरू कारज के लिए लगने में जो सहायता करती है, उसके लिए मैं बहुत सम्मान रखती हूं। मैं उनके स्नेह को कभी भूल नहीं सकती। एक या 2 वर्ष वह महोत्सव पर 18 - डी में भी आई, बहुत खुश थी, परन्तु फिर उनकी सेहत ने साथ नहीं दिया। जब श्रीमान बलदेव सिंह जी को विरोधता का सामना करना पड़ा तो वह उन्हें बहुत उत्साहित करती थी।

आज माननीय बहन सत्यवती जी शर्मा के भजन की चन्द पक्तियां पढ़ी तो दिल उद्वेलित हो गया कि उन्होंने अपने भजन में कितनी गहरी सच्चाई को प्रकट किया है।

"क्या जीवन पथ के राही भला, दिक्कतों से कभी घबराते हैं?"
उठते हैं बवन्डर चलती हैं प्रतिकूल हवाएं भी,
मिट जाते हैं वह जीवन में तूफां जो आते हैं।

यह सारा भजन पढ़ते हुए एक ओर बहन जी की याद ताजा हो गई कि वह बुरे से बुरे हालात में भी किस प्रकार स्वयं उत्साह से भरी रहती थी और दूसरों के भीतर नया जोश पैदा कर देती थीं। उनके पास चन्द घण्टे बिताने के बाद मैं तो कठिनाईयों से जूझने का नया उत्साह प्राप्त करती थी। एक ओर अपने उच्च धर्म सम्बन्धियों के ऊपर कई प्रकार के नजायज़ जुल्म होने पर वह गहरी हमदर्दी रखती

थी, दूसरी ओर उन कठिनाईयों को सहने को नई शक्ति संचार कर देती थीं।

आज इस विषय पर विचार करते हुए मुझे यह अनुभव हो रहा है कि कठिनाईयां कई प्रकार की होती हैं। कुछ प्राकृतिक आपदाएं हैं, जैसे गुजरात का भूकम्प आया, बिना किसी कसूर के हंसते खेलते परिवार और घर तहस नहस हो गए। ऐसी कठिनाईयों पर किसी का ज़ोर नहीं चलता। दूसरी किसी बिमारी आदि के कारण व्यक्ति और परिवार जो शारीरिक, मान्सिक और आर्थिक त्रासदी झेलता है, वह भी मनुष्य के हाथ में नहीं! परन्तु इन कठिनाईयो पर भी बुद्धिमान व्यक्ति अपनी समझ और आशावादी विचारों से काबू पा लेता है। मनुष्य की बुद्धि और उसके आत्मिक बल को बढ़ाने के लिए कठिनाईयां एक साधन हैं। कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करके ही मनुष्य में आत्म विश्वास, सम्पन्नता, परिपक्वता और प्रगति आती है।

दूसरी तरह की कठिनाईयां मनुष्य के अपने जीवन की उपज होती हैं। एक एक मनुष्य अपनी नीच वासनाओं के अधीन होकर अपने मार्ग में कांटे बोता है। एक एक नशे का गुलाम स्वयं अपने और अपने परिवार के लिए दुख खड़े करता है। एक एक प्रशंसा, मान बड़ाई का गुलाम दूसरों में झूठी वाह वाह के लिए या अपने नीच सुखों की तृप्ति करते करते दिवालिया हो जाता है। एक एक बच्चा पढ़ाई में समय न देकर अपनी नीच ख्वाहिशों में समय बर्बाद करके सारी ज़िन्दगी जो वह इज्ज़त के साथ रोटी रोज़ी कमा सकता था एक मजदूर बनकर रह जाता है।

एक एक बहुत मेहनती, योग्य व्यक्ति बहुत धन कमाकर, परन्तु मान बड़ाई के कारण अपने धन का दुरुपयोग करके तरह तरह की कठिनाईयों में फंस जाता है। ऋणी हो जाता है और आत्म सम्मान को गंवा बैठता है, इस प्रकार अपने आपको तरह तरह की कठिनाईयों में फंसा लेता है।

एक एक धन वा जायदाद का लोभी, उसे प्राप्त करने के लिए कत्ल तक कर देता है, जिससे सारी सारी उमर जेल की यातनाएं भोगता है।

तीसरी तरह की वह कठिनाईयां हैं, जो ईर्षा व द्वेष परायण वा लोभी लालची लोगों द्वारा दूसरे के लिए पैदा की जाती हैं। एक एक जन दूसरों की पदवी हथियाने, नौकरी हथियाने, उसकी मान मर्यादा को हानि पहुंचाने, निन्दा, चुगली के द्वारा दूसरों के सामने उसे नीचा दिखाने, किसी की जान, माल या इज्ज़त को नष्ट करने के द्वारा जो दूसरों के लिए कठिनाईयां पैदा करता है, मान्सिक यातनाओं में से एक एक जन को गुज़ारता है, वह कई बार इतनी असह्य होती हैं कि मनुष्य का मनोबल टूट जाता है। जिनको इन यंत्रणाओं में से गुज़रना पड़ता है, उनके मनोबल को बढ़ाने के लिए बहन जी ने उपरोक्त पंक्तिया लिखी हैं। जब किसी निर्दोष व्यक्ति पर नीच भावों से प्रेरित होकर कोई जन अपने बाहुबल, अपनी पदवी बहुमत वा शक्ति से हमले करते हैं, तो उन पर क्या बीतती है, उसका अनुमान भी वही जन लगा सकते हैं जो इस कोर्स में से गुज़रे हों। वह कैसे कैसे नीच जनों के वार एक एक कर्मठ, वफादार, ईमानदार जन को मौत के मुंह में धकेल देते हैं, बेशक वह लम्हें, वह पल पल मर मर कर जीना, वह असह्य सदमे से तड़पते हुए रातें गुज़ारना, वह समय तो वापिस नहीं आता, परन्तु सच्चाई और बुराई की इस जंग मे जो फ़तहयाब होते हैं, उनके उदाहरण दूसरों

को उभारने वाले बनते हैं और मानवता का यह विश्वास दृढ़ होता है कि आख़िर नीचता, झूठ, ईर्षा, द्वेष और फरेब के हथियारों से लैस नीच जनों को मुंह की खानी पड़ती है। जब चन्दा सिंह अपने यौवन पर था और देवात्मा के मिशन को ग़ारत करना अपना लक्ष्य बनाया हुआ था और उसके डर के कारण कोई वकील गुरु महाराज के लिए केस लड़ने वा सच्ची गवाही देने के लिए तैयार नहीं था, देखने वाले तो गुरू महाराज को बेबस और लाचार देखकर तरस खाते होंगे, और कई कहलाने वाले शुभ चिन्तक परन्तु कायर जन यह भी सोचते होंगे कि ऐसे शक्तिशाली आदमी से टक्कर लेकर क्या लेना है। परन्तु सच्चाई के लिए अटल विश्वास रखने वाले देवात्मा बुराई के विरुद्ध खड़े होने से रुक ही नहीं सकते थे। बेशक इस सारे किस्से के दौरान देवात्मा को जो शारीरिक, मान्सिक और हार्दिक आघात लगे, उनका कफारा नहीं हो सकता था, परन्तु आख़िर बुराई का अन्त हुआ और वह चन्दा सिंह जिसकी तूती बोलती थी, जो बड़े बड़े महलों का मालिक था, अन्धा होकर एक झोंपड़ी में गुमनामी की ज़िन्दगी बसर करके अन्धेरों में खो गया।

देवात्मा के जीवन के अनेकों उदाहरण हमारे सामने हैं, वह बुराई और बुरे लोगों के सामने झुके नहीं, डटकर उनकी पैदा की हुई कठिनाईयों का सामना किया और सदा विजयी हुए। उच्च लक्ष्य के लिए, न्याय के लिए कठिनाईयों का मुकाबला करना ही असल मर्दानगी है।

सत्यवती जी शर्मा के पत्र क्या थे,उनमें सच्चाई और उत्साह का भरपूर सामंजस्य होता था। वर्तमान समाज के चन्द जनों के बिना बहुत से जन उनके जीवन के विषय में नहीं जानते। उनके भीतर अपने पराए का पक्ष नहीं था, जो बात उन्हें ठीक लगती, वह मुंह पर कहने का साहस रखती थीं। उनका एक एक पत्र एक ओर हमारे भीतर जान फूंक देता था, दूसरी ओर ऐसे ऐसे तथ्य वह लिखती थीं और कहती थी कि यदि वह पत्र छप जाऐं तो कई जनों के मुल्लमें उतर जाएं और असली चेहरे सामने आ जाएं। जिस जिस प्रकार की प्रवंचना, चालबाज़ियों और साजिशों का एक एक जन ने सहारा लिया है, वह सब पोल अपने पत्रों में खोल देती थीं। दूसरी ओर वह एक ऐसी महिला थीं कि जिन्होंने अपने निर्दोष वरिष्ठ धर्म सम्बन्धियों के ऊपर होने वाले अत्याचारों, अन्यायों को अनुभव ही नहीं किया, परन्तु खराब से खराब हालात में भी बुराई का डटकर मुकाबला करने की जान फूंकती रही।

23 जनवरी 1983 के एक पत्र में लिखा :

"मेरा तो यह पूरा विश्वास है कि मनुष्य जिस बात को ठीक समझे, उसी पर दृढ़ रहे, तो समय अपने आप दूसरों को झुका देता है। यह बात अधिक अर्थ नहीं रखती कि बीच का अन्तराल हालात को ठीक करने के लिए कितना लम्बा हो गया। जीवन में ढेरी ढाह कर नहीं बैठना चाहिए, क्योंकि मनुष्य जीवन में खुशियां बिखेरने के लिए उत्पन्न हुआ है। बाकी व्याघात प्रति व्याघात संघर्ष प्रति संघर्ष भी चलते रहते हैं। हालात का बदलना भले ही हमारे हाथ में न हों किन्तु संघर्ष हमारे हाथ में है, उसे क्यों छोड़ दिया जाए।"

एक और पत्र में हमारे संघर्ष की सराहना करते हुए उन्होंने यह पंक्तियां लिखीं :-

"दर्द व्यर्थ उद्‌गम न होने दिया,
लोचनों को तरल नम न होने दिया,
संकटों ने मचाया बहुत शोर पर,
आस्था को कभी कम न होने दिया।"

(सुरजीत बराड़)

एक पुराना पत्र

यह पत्र श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने देवकी नन्दन, सपुत्र श्रीमान रूप चन्द जी के नाम लिखा था।

श्री अकबरपुर (4.9.2012) : वह लिखते हैं :- बहुत बहुत सम्मान के योग्य श्रीमान देवकी नन्दन जी, सत्यदेव की जय।

आशा है कि परिवार में सब कुशल मंगल होगा। आपके पिता जी एवं हमारे बज़ुर्ग धर्म सम्बन्धी माननीय श्रीमान रूप चन्द जी के अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। आपके पिता जी विशेष आत्मा हैं, अपने माता पिता से उन्हें अच्छी आत्मिक पूंजी मिली है। आपके भले के लिए विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जो सम्बन्ध महसूस करते हैं, देव समाज में दूसरा कोई कर्मचारी महसूस नहीं करता।

मुझे याद है कि एक बार मैं श्रीमान बलदेव सिंह जी के साथ लखनऊ गया था। वापसी में रिजर्ववेशन न मिलने के कारण मैं तथा श्रीमान जी 8 घण्टे तक खड़े खड़े सफर किया था। श्रीमान जी आपके परिवार के भले के लिए वर्ष में एक दो बार लखनऊ आते रहते हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने मेरा वा मेरे सारे परिवार का भला किया है। अत:अब हमने श्रीमान जी की ही रहनुमाई में काम करना है। आप जरा सोचें कि श्रीमान बलदेव सिंह जी ने पिछले 54 - 55 वर्षों में जितना काम किया है, वह सारी समाज के सारे कर्मचारी भी वर्तमान में नहीं कर सके। किसी श्रीमान जी ने कभी भरी सभा में अपने पापों का प्रायश्चित नहीं किया, जिस प्रकार श्रीमान बलदेव सिंह जी ने किया है। कौंसल ने श्रीमान जी को स्कूटर खरीदकर दिया था। (क्षमा करना, यह ग़ल्त फहमी है, श्रीमान जी ने स्कूटर अपने पैसों से खरीदा था।) उन्होंने कभी पेट्रोल तक के पैसे नहीं लिए। कभी उन्होंने कार तक समाज से नहीं खरीदी। सैक्टर 45 - बी, 7 एकड़ ज़मीन खरीदी, 3 एकड़ ज़ीरकपुर में खरीदी, धर्मवीर जी ने गुड़गांव में जो ज़मीन खरीदी थी, वह भी श्रीमान जी की प्रेरणा से खरीदी थी।

श्रीमान शादी लाल जी से 5 लाख रुपये लेकर रुड़की में जगह खरीदी, पदमपुर, मल्लेका, वा कल्याण में अपनी ओर से 20 - 25 लाख रुपया लगाया तथा डबवाली, थराजवाला और लुधियाना में भी मन्दिर बनवाने का संग्राम किया। गुरू के पावन जन्म स्थान पर 50,000 के नये पत्थर लगवाए। इन्होंने गोनियाना, पदमपुर, रुड़की, सहारनपुर, केसूपुरा, कल्याण आदि क्षेत्र चलाए हैं। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, मेहर सिंह जी, किशन सिंह चौहान, ज्ञानचन्द, जगदीष जी आदि दर्जनों जनों को बदला है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी अपने ख़िलाफ सुन लेते हैं और ..... श्रीमान जी अपने ख़िलाफ एक शब्द भी सुनना पसन्द नही करते हैं, उल्टा उसे विरोधी करार दे देते हैं।

श्रीमान जी, जब देव समाज के 36 - बी में सैक्रटरी थे। दफ्तर में बाबू कम से कम वेतन लेते थे या कुछ मुफ्त काम करते थे, अब दफ्तरों, बाबूओं, कारों, पैट्रोलों पर कितना अधिक खर्च हो रहा है।

अत: मेरा निवेदन है कि हमें आपस में मिलजुल कर श्रीमान बलदेव सिंह जी अगुवाई में सत्संग वा महोत्सव में सम्मलित होकर अपना भला करना चाहिए।

सम्मान भाव से
किशन सिंह चौहान

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

एक बेटे के उद्‌गार

(अंग्रेजी से अनुवाद)

अपने आसाधारण माता पिता का धन्यवादी हूँ, जो मुझे इस दुनिया में लेकर आए और जितनी बढ़िया से बढ़िया परवरिश दे सकते थे उन्होंने दी। बढ़िया से बढ़िया शिक्षा दी। मेरी पढ़ाई, खेलों मेरी सफलता और मनोरंजन का सर्वोत्म प्रबन्ध किया। मैं अपने (grand parents) दादा, दादी, नाना, नानी, मेरे दोस्तों का धन्यवादी हूँ जिन्होंने मुझे बेहद प्यार और हौसला दिया।

मैं अपने अध्यापकों, अपने मार्ग दर्शकों का धन्यवादी हूँ, जिन्होंने मेरा मार्ग दर्शन किया और सर्वोत्म मानसिक ज्ञान दिया। मैं अपने तन, मन का भी धन्यवादी हूँ, जो पारिवारिक विरासत से मुझे मिले।

मैं नेचर से यही आशा करता हूँ कि मैं अच्छा इन्सान बनूं, शरीर दिमाग़ और आत्मिक लिहाज़ से कामयाब बनूँ। मेरी ज़िन्दगी में बहुत बड़े बड़े मौके आ रहे हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं अपने माता-पिता, अपने सम्बन्धियों, अपने दोस्तों और मानव जगत, पशु जगत और वनस्पति जगत के लिए धन्यवादी बनूँ और उनका सम्मान करूं।

नोट : इस पत्रिका के लेखों को निष्पक्ष होकर पढ़ें। कई बार हमारे नसलों में आए संस्कार हमें सच्चाई को देखने में कष्ट देते हैं, परन्तु इस वैज्ञानिक युग में हमें नये विचारों के लिए दिल और दिमाग़ खुला रखना चाहिए।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59695

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts